International Journal of Education and Science Research Review
P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org August- 2017, Volume-4, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

अर्चना चौहान असवाल
पी0द0ब0 पीजी कालेज कोटद्वार
हे0न0ब0ग0वि0वि0,उत्तराखण्ड

नल से शुरू होने वाले इस व"ा ने उस समय ख्याति पाई जिस समय राजपूतों का शार्य भास्कर अस्ताचल के समीप था, अकबर के संरक्षण में युद्व लड़कर इसने हिन्दुआ के सूरज मेवाड के महाराणा प्रताप को पीछे धकेल दिया मगल काल में ये प्रतिष्ठित होते गये ।

राजा भारमल :
1562 में अकबर आमेर की यात्रा पर था ठीक उसी समय सर्फुदीन जो कि मेवाड का अधिपति था उसन झारमल के भाई के पुत्र राव खंगार तथा राज सिंह को अपने पास बंधक रखा हुआ था, भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर सर्फुदीन से सुरक्षा पायी तथा खंगार व राज सिंह स्वतंत्र हुए भारमल को दरबार में 5000 सवार तथा जात का मनसब मिला तथा भगवानदास जगन्नाथ सहलदी खंगार मनसबदार बन गये। भारमल तथा अन्य कछवाहा सरदारों ने मेडता, जोधपुर, चित्तौड़ व कालिंगज युद्व में अकबर को विजय दिलवाई । मनसब के अलावा राजा भारमल को आमेर प्राप्त हुआ अन्यथा सूरजमल (सूजा) व सर्फुदीन उस पर हावी हो चुके थे, तथा आमेर उससे छीन सकता था, इसके अलावा टोडा भीम इलाके के नाहण कस्बा के मीणों को परास्त कर लवाण बसाया।

भगवानदास :
यह भी मुगल दरबार में प्रतिष्ठित रहा भगवानदास तथा उसके पुत्र मानसिंह ने गुजरात, लाहौर, ईडर, मेवाड़, पठान एंव पंजाब के पहाड़ी राज्यों का दमन करने में अकबर को सहायता दी इसलिए कछवाहों को पंजाब व बिहार की जागीर प्राप्त हुई। रासाल के युद्व में अकबर के प्राणों की रक्षा करने के कारण भगवानदास को नक्कारा तथा ध्वज मिला जो कि उससे पूर्व किसी हिन्दू राजा को प्राप्त नहीं हुआ। इस काल में भगवानदास ने भगवानगढ नामक किला आमेर, आगरा, फतेहपुर, सीकरी तथा लाहौर में कई महल बनवाये। मथुरा में भगवान बिहारी का मन्दिर भी बनवाया।

मानसिंह राजा मानसिंह बिहार, काबूल, उड़ीसा तथा बंगाल का सूबेदार रहा। बंगाल का सूबेदार रहते हुए भी वह अजमेर में निवास करता था तथा बंगाल का प्रबन्ध अन्य कछवाहा सरदार करते थे, अकबर ने 1604 में उसे 1000 स्वर्ण मोहर 1 लाख 20000 रूपये तथा 7000 जात व 6000 का मनसब दिया जो अभी तक अकबर के भाई के अलावा किसी को प्राप्त नही हुआ था। मान सिहं नें मेवाड़ का दमन बिहार के दाउदखां का दमन काबूल के मिर्जा हाकिम का दमन बिहार के हिन्दू राजाओं का दमन उड़ीसा के पठानों का दमन अफगानों को मुगल अधीनता भी स्वीकार करवायी बंगाल विजय कूचबिहार विजय प्राप्त की। मानसिंह नें मान मन्दिर, सरोवर घाट, वृन्दावन गोविन्द मन्दिर, रोहता"ागढ़ के किले,कूटक बनारस किला आदि बनवाये ।

भावसिंह : इसके काल में जोधपुर राजव"ा का प्रभाव बढ़ गया था।

मिर्जा राजा जयसिंह :
मुगल दरबार में प्रवे"ा करते ही इसे 3000 जात व 1500 सवार का मनसब प्राप्त हुआ यह मुगल दरबार का शक्ति"ाली स्तम्भ था । 1627 में 4000 जात 3000 सवार का मनसब झण्डा व नगारा प्राप्त हुआ इसने महावन के जाटों का शाहजहां के आदे"ा पर दमन कर दिया । खाने – जहां लौदी का वध किया, एक बार 28 मई 1633 को औरंगजेब हाथियों का युद्व देख रहा था तब एक हाथी ओरंगजब को मारने के लिए लपका तब राजा जयसिंह ने हाथी का भाला मारकर भगा दिया। इसने निजाम तथा बीजापुर की सेना का दमन किया जिन्होंने मुगल सेना को घेरा लिया था, इस घेरे को राजा जयसिंह ने बड़ी बहादुरी एंव बुद्वीमता से तोड़ दिया। इसने शाहजी के 3000 सैनिकों को गिरफतार किया तथा 8000 गाड़ी माल पर कब्जा कर लिया। जयसिहं को दक्षिण की सूबेदारी प्रदान की गई । साथ ही 5000 जात व 5000 सवार का मनसब दिया गया। जयसिंह के पुत्र को कामा, पहाड़ी व खो मुजहीद के परगने दिये गये। ि"ावाजी को मजबूर कर

मुगल दरबार में आमंत्रित किया तथा ि"ावाजी ने अपने 23 किले मुगलों को सौंप दिये। जबकि इतिहासकार ि"ावाजी को अजय मानते थे।
डा0 मदुनाथ सरकार के अनुसार इसमें राजपूतो की वीरता तथा मुगलों सी चालाकी विघमान थी।
इसके जीवनकाल में औरंगजेब हिन्दू विरोधी कोई चालाकी न कर सका। इन युद्वों में विजय प्राप्ति न जयसिंह को उसके जीवन की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया, उसने आमर में जयगढ़ आमेर के महल व औरंगाबाद में जयसिंह पुरा बनवाया।

रामसिंह :– वह अपने पिता के समान ख्याति अर्जित न कर सका।

विशनसिंह कछवाहा : इसने सिसाणी के जाटों का दमन किया तथा काबूल के पठानों का विद्रोह दबाया। इसका मनसब 3000 था इसे हिण्डौन का परगना जागीर में मिला।

जयसिंह 2 (सवाई जयसिंह) :
इसने वि"ाालगढ़ (मराठा किला) विजय किया इसने मराठों को आत्म समर्पण कारवाया तथा मुगलों व मराठों में समझौता करवाने म यह मध्यस्थ था। यह 7000 मनसब के साथ मालवा का सूबेदार रहा। इसने मराठों को नर्मदा के पार खदेड़ दिया। जाटों का दमन किया। इन्होंने बहादुर शाह प्रथम के समय अजीत सिंह एंव उदयपुर के राणा से संधि करके मुगलों के खिलाफ संगठन बनाया। यह तीन बार मालवा का सूबेदार रहा। इसने 51 परगने बाद"ााह से ठेके पर सलाना ले लिए इसने बाद में शेखावाटो के परगने को अपने अधीन कर लिया जबकि पहले वो बाद"ााह के मनसबदार थे। इससे पूर्व अमर राज्य में केवल 3 परगने आमेर, दौसा व बसवा ही थे। कोठा व बूंदी भी इसके अधीन थे। इसने आमेर में कई महल बनवाये, जयपुर में गहरगढ, मोती डूंगरी किला,गणे"ागढ़, आमागढ़ आदि उसने जयपुर दिल्ली, मथूरा तथा उज्जैन में वेध"ाालाये बनायी। इसने जयपुर बसाया तथा मुगलकाल में राजपूतों की वि"ोषतायें अ"वमेघ यज्ञ , राजसूर्य यज्ञ करवाये तथा विभिन्न गणितज्ञो एंव ज्योतिषों को अपने पास बुलवाकर बैज्ञानिक शोध शुरू करवाया।

मुगल काल में जयपुर नरेशों का व्यवहार :
उपर्युक्त राजाओं के विवरण से पता चलता है कि कछवाहा नरे"ाों ने मुगलों की स्वामिभक्ति से स्वयं तथा मुगला की उन्नति की इनमें विभिन्न राजाओं की व्यक्तिगत स्वामिभक्ति तथा वीरता बहुत मायनें रखती हैं भारमल ने हाथियों को नियंत्रित करके वीरता दिखाई तो मानसिंह ने कई अवसरों पर अकबर के प्राणों की रक्षा की चाहे वह युद्व में रहा था या कभी न"ो की झोंक में मुगल तथा कछवाहे अपने संबंधों को उचित स्थिति में रखक साम्राज्य की उन्नति करते रहे, कछवाहा नरे"ाों ने विभिन्न कछवाहा जागीरदारों पर उचित नियंत्रण बनाये रखा यघपि वे सरदार मुगलों के मनसवदार भी थे जैसे – अमरसर व शेखावाटी के शेखावत हो कामा के राजावत या माचेड़ी के नरूका हो अपनी कूटनीति तथा बल प्रयोग से सभी को नियंत्रित रखा जयसिंह सवाई ने तो मुगल सम्राट से 51 परगनें 25 लाख रूपये में वार्षिक ठेके पर लिये तथा जयपुर का विस्तार कर उसकी राजनैतिक एकता बनाये रखी यदि कभो किसी सरदार ने स्वतंत्र होने की कोि"ा"ा की तो उसे मरवा दिया गया जैसे मनोहरपुर के खंगारोत सरदार का मरवाना। जयसिहं की खतरनाक कूटनीति एंव बल प्रयोग की घटना थी, इस प्रकार दौसा के बडगूजरों के बगावत करने पर जयपुर नरे"ा ने बडगूजरों का सफाया इस प्रकार किया कि वे राज्स्थान में केवल कुछ गांवों तक सिमट गये उन्हें अपना पैतक स्थान छोड़कर दोआब में शरण लेनी पड़ी यहां पर इन्होंने अनूप शहर नाम से नयी जागीर स्थापित की।

जाटों के विरूद्व अभियान :
जाओं के स्वभाव से मुगलकालीन कछवाहे अच्छी तरह से परिचित थे सिसाणो के जाट हो या भरतपुर के जाट इन जाटों को कछवाहों ने दबाये रखा विसन सिंह हो या जयसिंह द्वितीय अथवा सवाई जयसिंह इन के काल में जाट कभी शक्ति न बन पाये भरतपुर के जाट सरदार भी सवांइ जयसिंह के जीवित रहते कभी राजा की स्थिति तक न पहुंचे इस काल मे भी भरतपुर के जाट द"ाहरे तथा अन्य अवसरों पर जयपुर के राजाओं के दरबार में अपनी स्वामिभक्ति प्रकट करने जाते रहे।
उडीसा के पठानों का मुगलों की सेवा में लाना :
राजा मान सिंह जो कि बिहार में था। उडीसा के पठानों के 1580 में बगावत करने पर उनका दमन किया। जलेसर रायपुर विष्णुपुर पर कब्जा कर लिया बड़ी उपलब्धि ये रही कि इन पठानों को मुगलों के अधीन मनसबदारी स्वीकार

करने के लिए बाध्य किया पठान सदैव से ही मुगलों के प्रतिद्वन्दी रहे एक बार तो उन्होंने मुगलों को हिन्दुस्तान से बाहर ही कर दिया था किन्तु मानसिंह ने अपने दृढ संकल्प से असम्भव को भी संभव बना दिया बदले में मानसिंह ने अकबर से उपहार प्राप्त किये।

अफगानिस्तान अभियान :

अफगानिस्तान जो एक अलग भौगोलिक परिस्थितियों वाला दे"ा था, वे मानसिंह ने यहां पर मुगलों के संबंधी मिर्जाओं का दमन किया, इन अभियानों ने कई बार मानसिंह ने मौत के मुंह में पहूंचा दिया। किन्तु भाग्य तथा संकल्प के बल पर उसने अपने आपको सिद्व कर दिया तथा इन अभियानों से मानसिंह ने बडो मात्रा में स्वर्ण तथा जवाहरात प्राप्त किये विभिन्न अभियानों से धन की प्राप्ति से जधपर नरे"ाों के पास खजाना इकट्ठा होता गया जिसे हथरोई के किले या जयगढ़ के किले में अत्याधिक सुरक्षा के साथ रखा गया जिसकी सुरक्षा वफादार मीणे करते थे राजा भी बिना इन मीणों की आज्ञा के खजाने में प्रवे"ा नहीं कर सकता यह गुप्त खजाना मराठों तथा अंगजों की गिद दृष्टि से बचाकर रखा गया था **लेकिन आजादी के बाद इस खजाने को प्राप्त करने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने परिषद बनाइ तथा देश में आपातकाल के दौरान जयगढ पर छापे मारे गये खजाने के नक्शो तथा रास्ते को मालूम करने के लिए खजान के वफादार मीणा सहित जयपुर नरेश सवाई मानसिंह तथा महारानी गायत्री देवी पर जुल्म ढ़ाये गये बाद में इस खजाने को खोदकर के प्राप्त कर लिया गया इसे सेना के ट्रकों से भरा गया तथा दिल्ली, जयपुर मार्ग को सील करके दिल्ली पहुंचा दिया गया कुछ समय पहले कुछ नागरिका ने आर0टी0आई0 के तहत इसके विषय में जानकारी मांगो गई किन्तु नागरिको को संतोष जानकारी या उत्तर प्राप्त नही हुआ जिससे प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की कार्यवाही तथा ध्यय पर संशय उत्पन्न होता है।**

राजपूतों को मुगलों की सेवा में लाना :

कछवाहा नरे"ा ने विभिन्न राजपूतों को मुगलों की सेवा में ला दिया जिन्हें अकबर अपने शस्त्रबल से कभी भी अपने अधीन नहीं कर सका था। रणथम्भौर के हाण्डा चौहान इसी तरह का उदाहरण है वे चित्तौड़ के सामन्त थे तथा प्रताप की ही भांति गर्वीले थे, सूर्जन हांड़ा जो कि अकबर का समकालीन था तथा अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं करना चाहता था, रणथम्भौर के घेरे से किले को जीतने की कठिनता उसे मालूम थी किन्तु कछवाहों के सहयोग से अकबर का रणथम्भौर अभियान सफल रहा किन्तु अकबर को यह विजय कुछ शर्तों पर मिली थी, इस विजय में भी रणथम्भैर के हाण्डाओं ने अपने अभिमान को मरने नहीं दिया था रणथम्भौर के किले की चाबी के एवज में अकबर से कुछ संधि की शर्तें रखी गई थी।

1. हाण्डा राजपूतों को अपनी लड़कियों को मुगलों के साथ विवाह करने के लिए मजबूर नहीं किया जायेगा।
2. हाण्डा राजपूता के घोड़ों को न तो दागा जायेगा और नही उन पर मुगलों का फूल वाला नि"ाान ("ााही नि"ाान) लागाया जायेगा।
3. हाण्डाओं की स्त्रियां मीना बाजार में नहीं जायेगी।
4. हाण्डा राजा अकबर के दरबार में स्वयं नहीं जायेगा।
5. हाण्डाओं को दरबार मे जाते वक्त नगाड़ा बजान की छूट दी जायेगी।
6. हाण्ड राजपूत किसी अन्य सरदार की अधीनता मे नहीं लड़ग।

शर्तें काफी महंगी थी लेकिन अकबर ने स्वीकार कर ली। कछवाहे केवल दो अन्य राजाओं को उसकी सेवा में न ला सके चित्तौड़ के राणा प्रताप तथा मारवाड का राव चन्द्रसेन। किन्तु जहांगीर के काल मे राणा अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली यह कछवाहों की स्वामिभक्ति का ही परिणाम था।

मराठों पर नियंत्रण :

सवाई जयसिंह द्वितीय ने अपनी दक्षिण नीति के समय खेलना के गढ पर कब्जा कर लिया तथा मुगल व मराठों के बीच मध्यस्थता की इससे पूर्व मिर्जा राजा जयसिंह शाहजी के पुत्र ि"ावाजी भौसले को आत्मसमर्पण करवा के दिल्ली दरबार ले गये तथा ि"ावाजी के 23 किलों पर मुगलों का अधिपत्य हो गया किन्तु औरंगजेब की हठधर्मिता से वो पुनः बागी हो गये तथा मराठे कालान्तर में भारत की प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे।

संक्रमणकाल :

जयसिंह द्वितीय (1700–1743) (सवाई जयसिंह) का शासनकाल मुगलकाल तथा मराठाकाल के बीच का संक्रमणकाल था मराठों का प्रभाव गुजरात मालवा तथा राजपूताना में जोर पकड़ रहा था सवाई जयसिंह मालवा में मराठों को प्रवे"ा करने से बचाता रहा बाद मे मराठों न बूंदी के उत्तराधिकार के मसले पर सवाई जयसिंह द्वितीय को दो लाख रूपये देकर मराठों से सालम सिंह को छुड़वा दिया बाद मे मराठों ने राजपूताने मे प्रवे"ा किया जिसके कारण राजपूताने के सभी शासको ने हरडा सम्मेलन बुलाया 13 जुलाई 1734 को उदयपुर मे यह सम्मलन हुआ किन्तु विफल रहा बाद में मराठों से जयपुर नरे"ा ने 22 लाख रूपये देकर संधि करनी पड़ी।

औरंगजेब की मृत्यू के बाद में सवाई जयसिंह द्वितीय की मृत्यू से कोई एसा शासक न रहा जो कुछ कर पाता मराठे निरंतर हावी होते गये तथा जयपुर का पतन शुरू हो गया। आगे आने वाले कछवाहा राजाओं पर मराठे तब तक हावी रहे जब तक कि अंग्रेजों ने जयपुर को अपने अधीन न ले लिया।

मराठा काल

ईश्वरी सिंह (1743–1750) :

ई"वरी सिंह तथा माधोसिंह के बीच उत्तराधिकार का युद्व चल रहा था जिसमे होल्कर ने माधोसिंह एंव जयअप्पा ने ई"वरी सिंह का पक्ष लिया मराठा सरदारों के इस प्रकार पक्ष व विपक्ष में रहने का कारण धन था। धीरे–धीरे जयपुर का खजाना खाली हाने लगा बगरू के युद्व में मराठों ने धन की मांग की तथा ई"वरी सिंह न दे सका बाद में होल्कर ने के"ावदास की हत्या के कत्ल का बदला लेने क लिए जयपुर पर आक्रमण किया, इससे घबराकर ई"वरी सिह ने काले नाग से डसवाकर आत्महत्या कर ली।

माधोसिंह :

माधोसिंह के काल में होल्कर ने जयपुर पर हमला कर दिया तथा कई जागीरदारों को अपने अधीन कर लिया। मराठों ने 1753 में माधोसिंह से धन की मांग की तब माधवराव एंव मल्हारराव ने 16 लाख की मांग की किन्तु माधोसिंह ने 10 लाख रूपये दे दिये। 1757 में रघुनाथ राव ने 40लाख की मांग की लेकिन 11 लाख रूपये मिले तथा जनकोजी सिंधियों ने 36 लाख की मांग 4 वर्षों मे की किन्तु इससे पहले की वो कुछ प्राप्त करता मराठे पानीपत में परास्त हो गये।

पृथ्वी सिंह :

इसके शासनकाल म गैरकुलीन लोगों का प्रभाव बढ गया था, इस कारण पृथ्वी सिंह के दरबार में ठाकुरों ने आना छोड़ दिया था। इस काल में अम्बाजी दांगालिया का प्रभाव जयपुर पर बढ गया था तथा अम्बाजी दागालिया के मराठा सरदार ही कछवाहा सरदारों से लगान वसूलते थे राजमाता ने इस समय कछवाहों को दबाये रखा। इस समय माचेड़ी के राव को स्वतंत्र शासक मान लिया गया।

प्रताप सिंह :

इस समय महादजी सिंधिया का दरबार मे प्रभाव या उसन मानसिंह को अपने स्वार्थ साधन का मोहरा बना रखा था। महादजी सिंधिया ने 18 दिसम्बर 1784 को रामगढ़ का किला कब्जे मे ले लिया तथा एक बड़ी रकम की मांग जयपुर से की गई इस प्रकार की मांगों को टांका कहा गया है। बाद में मराठों ने चौथे की मांग भी की तथा टांका के रूप 240 लाख रूपये की मांग कि"तों में की गयी।

प्रतापसिंह के काल से जयपुर राज्य में अंगजों का प्रभाव बढने लगा था। या यूं कहे कि प्रताप सिंह के काल मे मराठों का प्रभाव घटने लगा था दोनों एक ही अर्थ वाले कथन हैं।

मराठों से प्रभावित जयपुर की गतिविधियां :

सवाई जयसिह द्वितीय का वह वचन था जिसके अनुसार सवाई जयसिंह द्वितीय का उत्तराधिकारी उदयपुर की राजकुमारी से उत्पन्न पुत्र ही होगा जबकि ि"वसिंह तथा ई"वरी सिह ज्येष्ठ होने के नाते दावेदार थे, सवाई जयसिंह ने अपने वचन का पालन करने के लिए अपने पुत्र ि"वसिंह की हत्या करवा दी तथा ि"वसिंह के पुत्रो को कैद करवा लिया गया, सवाई जयसिंह की मृत्यू के बाद उदयपुर राणा के भानजे माधोसिंह तथा जीवित ज्येष्ठ पुत्र ई"वरी सिंह के बीच युद्व हुआ जिसमें सर्वाधिक लाभ मराठों का हुआ मराठे धन के लोभ से दोनों पक्षों की सैनिक सहायता करते एंव

राज्य में हस्तक्षेप करने लगे मराठों ने माधोसिंह के लिए 4 परगने टोंक टोडा, मालपुरा एंव निवाई प्राप्त करने की को"ा"ा की किन्तु यह योजना सफल न हो सकी। इसी वक्त ई"वरी सिंह का बुद्विमान सलाहकार राजमल खत्री उर्फ अयामल मर गया किन्तु हरगोविन्द नाटाणी ने बड़ी कु"ालता से ई"वरी सिंह को माधोसिंह पर विजय दिलवाई किन्तु ई"वरी सिंह ने नाटाणी की पुत्री से प्रेम संबन्ध स्थापित किया जिससे नाटाणी प्रति"ोध की प्रतिक्षा करने लगा तथा नाटाणी न होल्कर को जयपुर पर चढ़ आने का मौका दिया तथा सेना को युद्व हेतु तैयार न रख के धोखा किया जिससे राजा ने काले नाग से डसवाकर आत्महत्या कर ली। इसी बीच प्रताप सिंह ने अलवर रियासत को जयपुर से अलग कर लिया जिससे जयपुर राज्य की अमदनी घट गई जयपुर के राजा अब भी मराठों से चिपके हुए थे, लेकिन मराठों तथा राजपूतों के चरित्र मे बढ़ा भारी अन्तर था राजपूत धोखेबाजी तथा दावपेंच में चतुर न थे वचन देकर पलटना वो नहीं जानते थे जबकि मराठे धोखाधड़ी, दगाबाजी लूटपाट सभी प्रकार के दावपेंचों मे ंनिपुण थे, राजपूत आपने सामने की लड़ाई लड़ना ही जानते थे वे केवल शौर्य को सर्वोपरि मानते थे जयपुर राज्य के दीवान तथा जयपुर क कछवाहा सरदार भी मराठों के पक्ष में हो गये थे।

इ"वरी सिंह जहां अंधवि"वासी तथा तंत्रमंत्र में वि"वास करने वाला चरित्रिक रूप से ि"ाथिलता का ि"ाकार था वहीं प्रताप सिंह बुद्विहीन अविवेकी एंव उघत स्वभाव का था, वह कभी कभी जनाने कपड़े पहनकर तथा पांवों में घुघंरू बांधकर हरम में नाचा करता था, एंव सुरा–सुंदरी का वि"ोष शौक रखता था, कभी–कभी वह रात को धनवानों के घर जाकर उन्हें डरा धमका कर धन ले आया करता था, प्रताप सिहं के काल का वर्णन करते हुये फ्रान्सीसी लेखक जे पीलेट नें लिखा है यह राज्य जो कभी आबाद हुआ करता था अब लगभग नष्ट व गैर आबाद कर दिया गया यूं तो काफी पैदावार होती है लेकिन सब सेना खा जाती है मराठों के कारण इनका व्यापार भी चौपट हो गया है!

पृथ्वी सिंह के काल में साधारण सेवको को जयपुर के ठाकुरों के बराबर दर्जा दे दिया गया था। जिसमें महावत घोड़े चराने वाले थे। जिससे प्रतिष्ठित ठाकुरों ने राजा का साथ छोड़ दिया।

संदर्भ सूची

1. कछवाहों का इतिहास,देवी सिहं मण्डावा
2. खंगारोतों का इतिहास,राघवेन्द्र सिहं
3. राजपूत वंषावली,ईष्वर सिहं
4. .धरोहर,कुंवर कनक सिहं राव
5. आधुनिक राजस्थान का इतिहास,डा0गोपीनाथ षर्मा
6. मराठों का नवीन इतिहास,सरदेषाई
7. लाईफ एण्ड टाईम ऑफ सवांई जय सिहं,बीएस भटनागर
8. मान सिहं आमेर,आर्यन प्रसाद
9. मीणा जनजाती का इतिहास,डा0 यषोदा मीणा
10. .निबन्ध मुगलों के अफगानिस्तान अभियान,इरफान हबीब